योगानंद ने पूरब का संदेश पश्चिम तक पहुंचाया: योगी

125वीं जयंती

राज्य मुख्यालय | विशेष संवाददाता

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मानवता के कल्याण के लिए हजारों वर्षों से भारत की ऋषि परम्परा के प्रसाद के रूप में योग, ध्यान, समाधि आदि अवस्थाओं का प्रचार किया गया है। परमतत्व का ज्ञान प्राप्त करने में सहायक भारतीय ऋषि परम्परा के प्रसाद को पूरब से पश्चिम तक पहुंचाने वाले परमहंस योगानन्दजी एक महान सन्त थे।

मुख्यमंत्री ने यह बात अपने सरकारी आवास पर परमहंस योगानन्द की 125वीं जयन्ती पर आयोजित समारोह में कही। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक जिज्ञासु होने के कारण योगानंद जी ने ध्यान बहुत रुचि ली। पूरब का संदेश पश्चिम तक पहुंचाने का बड़ा काम योगानंद जी ने किया था। सीएम ने कहा कि योगानंद जी का मार्ग आज भी हम लोगों के लिए प्रासंगिक बना हुआ है। सीएम ने कहा कि अयोध्या की दीवाली 130 करोड़ लोगों ने देखा है।

राज्य सभा सांसद भूपेन्द्र यादव ने कहा कि जीवन जीने का सही तरीका केवल ज्ञान नहीं, बल्कि उसकी अनुभूति है। परमहंस योगानन्दजी ने क्रियायोग के माध्यम से संसार में रहते हुए ससीम से असीम होने का अनुभव दिया है। यह पद्धति वस्तुतः स्वयं को बदलकर व्यापक परिवर्तन का प्रयास है।

स्वामी ईश्वरानन्द गिरि ने मुख्यमंत्री को स्मृति चिन्ह के रूप में लीची का एक पौधा भेंट किया। यह पौधा लीची के उसी वृक्ष की पौध है, जिसके नीचे बैठकर परमहंस योगानन्दजी ध्यान करते थे।